2024

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - १

जून-

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जो महान ऐसे मानवभव और..... को पाने के बाद भी धर्म आराधना से वंचित रह जाते है वे मूर्ख शिरोमणी है।
२. मोहनीय कर्म के क्षय होने से ..... चरित्र गुण की प्राप्ति होती है।
३. अरिहंत परमात्मा के उपदेश का सार ..... है।
४. पृथ्वीतल पर ..... प्रथम राजा हुए।
५. आहार और ..... चर्मचक्षु से अदृश्य होते है।
६. हमारी सावधानी असंख्य जीवो को ..... दे सकती है।
७. देव अपनी शक्ति से एक बडे स्तंभ का .....बनाता है।
८. काल प्रभाव से ..... कम होने लगे।
९. प्रत्येक रचना में रचनाकार प्रथम गाथा में ..... को वंदन करके मांगलिक करते है।
१०. कैसा ..... है यह मानवभव, पर हमें मिल गया सहजतासे।
११. ..... अतिशय यानि स्वयं के संघ में उपद्रव का नाश करनेवाला।
१२. कर्मो के ..... में कारण रुप बनते जीव के अध्यवसाय वह भाव निर्जरा है।
१३. समवसरण में भगवान को बैठने के लिए रत्नजडित सोने के ..... की रचना देवता करते हैं।
१४. श्री ऋषभदेव प्रभु का वर्ण तप्त सुवर्ण जैसा ..... और तेजस्वी था।
१५. हम रहते है वह..... है।
१६. साधु ठाकूर को ..... पर बिराजमान देखकर आश्चर्यान्वित हुआ।
१७. ..... यह सन्मान और आदर की भावना व्यक्त करने का उच्च साधन है।
१८. ..... की अपेक्षा से सभी जीवों का एक ही प्रकार में समावेश होता है।
१९. राजा की बात सुनकर राजकुमार ..... हो गये।
२०. श्री ऋषभदेव प्रभु दुसरे भव में उत्तरकुरु में ..... हुए।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. पांच स्थावर क्या कहलाते है ?
२. काछुअे को शरदपूनमको किसके दर्शन हुए ?
३. शंख कौनसी गति का जीव है ?
४. तीन भुवन में दीपक समान कौन है ?
५. जौहरी किसकी परीक्षा करता था ?
६. युग याने क्या ?
७. पाप अशुभ कर्म का आश्रव है तो शुभ कर्मो का आश्रव कौनसा ?
८. पंच परमेष्ठि में उपाध्याय का रंग कौनसा ?
९. विविध प्रकार के अग्नि के जीव को क्या कहते है ?
१०. गोत्र कर्म क्षय होने से कौनसा गुण प्राप्त होता है ?
११. यशस्वान की पत्नीका नाम क्या था ?
१२. शतायुध कौनसी नगरी के राजा थे ?
१३. विविध वाह्य तथा अभ्यंतर तप के द्वारा धीमे धीमे कर्मो का क्षय होता है वह कौन सा तप है ?
१४. भय कौन सा उपद्रव है ?
१५. श्री अरिहंत ऋषभदेव कौन से नक्षत्र में मोक्ष गये ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. जलण २) चेयण ३) सरुवं ४) करग ५) पइवं ६) अेसो ७) वंदो ८) आउस्स ९) रंजण १०) कमणेंसिं
११. नायव्वा १२) लोए १३) अबुहु १४) प्रतिहार्य १५) बासीय १६) विद्दुम १७) वेय १८) वणस्सई
१९. नवतत्ता २०) सेढी.

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) प्रसेनजीत	१) वृक्ष	६) चिंतामणी	६) विकराल
२) हरताल	२) काई	७) पानी	७) रत्न
३) भोजनानंदि	३) देव-दुंदुभि	८) वाद्ययंत्र	८) धातु
४) पृथ्वीकाय	४) जीव	९) अरुपी	९) गुरुजी
५) ताक	५) धिक्कार	१० संसार सागर	१०) अभ्रक

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. सिध्ध भगवान के गुण कितने ?
२. संवर तत्व के भेद कितने है ?
३. ऋषभदेव प्रभु ने बाह्मी को कितनी लिपियां सिखायी ?
४. नवकार मंत्र का एक पद कितने सागरोपम के पांपो का नाश करता है ?
५. शतायुघ राजा के राज्यसभा में कितने खंभे थे ?
६. कुल नवतत्व के भेद में हुये भेद कितने है ?
७. नाभि कुलकर का शरीरमान कितना धनुष्य था ?
८. अरिहंत भगवंत के अतिशय कितने ?
९. इन्द्रियों की अपेक्षा से जीव के प्रकार कितने है ?
१०. संसारी जीव के भेद कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. मिथ्यात्व आदि कारणों से नये कर्मो का आत्म प्रदेश के साथ मिल जाना बंध तत्व है ।
२. अभिचन्द्रकी पत्नी का नाम चक्षुष्मती था ।
३. पंच परमेष्ठि में साधु का रंग पीला है ।
४. चार गति में जन्म मरण कर रहे जीव संसारी जीवो कें नाम से पहचाने जाते है ।
५. उपादेय याने जानने योग्य ।
६. श्री तीर्थंकर प्रभु की वाणी विलंब रहित है ।
७. लवण समुद्र की परिधि लगभग सत्रह लाख योजन की है ।
८. श्री ऋषभदेव प्रभु का गोत्र काश्यप था ।
९. मिट्टी, नमक, खार सभी अपकाय के जीव है ।
१०. साधु को घी से लथपथ रोटी मिली ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. सभी प्रकार का पानी स्वयं जीवमय है ।
२. अंधा मांगे आंख और भूखा मांगे भात ।
३. कपटी मरकर वहाँ हाथी हुआ ।
४. रत्नमय इन्द्रध्वज होता है ।
५. पाप अगर लोहे की बेडी है तो पुण्य सोने की बेडी है ।
६. अज्ञानी जीवों के बोध के लिए इस ग्रंथ की रचना की है ।
७. नारको नरक गति के जीव है ।
८. अति भलो, नरभव काळ घणे लय्यो अे.....
९. फिर प्रभु ने गोत्रवालों को धन बाँट दिया ।
१०. हम जैन है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जीव विचार का ज्ञान होना अति आवश्यक २) महान मंत्र नवकार ३) श्री ऋषभदेव की वंश स्थापना
४. उपदेश का सार "नव तत्व". ५) धान्यराशी का दष्टांत

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com